घोषणा

मैं कुमार सौरभ एतद् द्वारा यह घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध **"कुँवर नारायण के काव्य में जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध"**, हिंदी विभाग, मानविकी एवं मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असमके पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है इस शोध-सामग्री का उपयोग कहीं भी शोधोपाधि के लिए नहीं किया गया है और न ही यह शोध-शीर्षक अन्यत्र शोधोपाधि का आधार बना है।

Declaration

I do hereby declare that the thesis titled **"Kunwar Narayan Ke Kavya Mein Jeevan-Drishti Evam Mulya-Bodh"** submitted by me to Tezpur University, Tezpur, Assam in partial fulfillment of the requirement for the Degree of Doctor of Philosophy in the Department of Hindi under the school of Humanities and Social Sciences, is my own and that it has not been submitted to any other institution, including the University in any other from or published at any time before.

Kumar Saurabh

(कुमारसौरभ)
हिंदी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर
असम-784028

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कुमार सौरभ, शोधार्थी, हिंदी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम ने अपना शोध-प्रबंध **"कुँवर नारायण के काव्य में जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध"** मेरे पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में इस विश्वविद्यालय की पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य का परिणाम है। मेरे संज्ञान में इस अनुसंधान-सामग्री का उपयोग आशिंक या पूर्ण रूप से अन्यत्र शोध की उपाधि हेतु नहीं किया गया है।

Certificate

This is to certify that the thesis entitled **"Kunwar Narayan Ke Kavya Mein Jeevan-Drishti Evam Mulya-Bodh"** submitted to the School of Humanities and Social Sciences, Tezpur University, Tezpur in partial fulfillment for the award of degree of the Doctor of Philosophy in Hindi is a record of research work carried out by Kumar Saurabh under my supervision and guidance.

All help received by his from various sources have been duly acknowledged. No part of the thesis has been submitted elsewhere for the award of any other degree.

शोध-निर्देशक

(डॉ. अनुशब्द)
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मनिविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

डॉ० अनुशब्द
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय
तेजपुर, असम-784028

आभार

इस शोध-प्रबंध का पूरा होना एक सुखद स्वप्न के सच होने जैसा है। ईश्वर की असीम कृपा-दृष्टि के बिना यह कार्य संभव न था। मैं सर्वप्रथम उस परमपिता परमेश्वर का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे हर मुश्किल को आसान किया। अपने शोध-निर्देशक के रूप में डॉ. अनुशब्द के होने मात्र से कृतज्ञ अनुभव करता हूँ। इनका होना जीवन में उस विश्वास का होना है, जिसके बल पर चुनौतीपूर्ण कार्य भी सहजता से पूर्ण हो जाते हैं। शोध-कार्य के दौरान इनके सान्निध्य को अपना बहुत बड़ा सौभाग्य मानता हूँ। शोध-विषय से संबंधित छोटी समस्या हो या गंभीर चिंतन, इनके उचित मार्गदर्शन और तार्किक संवाद ने हमेशा ही मेरे मनोबल को बढ़ाया है। विभागाध्यक्ष डॉ. अंजु लता, विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रोफेसर सूर्यकान्त त्रिपाठी तथा विभाग के अन्य प्राध्यापकों के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर यथोचित सलाह दिया है। स्नातक के दिनों में मेरे मानस की ज़मीन पर साहित्य का बीज बोने वाले गुरुवर कौशल किशोर झा के प्रति श्रद्धावनत हूँ, साथ ही प्रोफ़ेसर अरबिंद कुमार झा का शुक्रगुज़ार हूँ, जिन्होंने विचारशीलता और तार्किकता के महत्त्व से अवगत कराया। शोध कार्य के दौरान उत्साह वर्धन के लिए अपूर्व नारायण जी और आशीर्वचनों के लिए भारती नारायण मैम का आजीवन आभारी रहूँगा|

मैं केन्द्रीय पुस्तकालय, तेजपुर विश्वविद्यालय, केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, केन्द्रीय पुस्तकालय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के अध्यक्षों का आभारी हूँ जिन्होंने शोध-विषय से संबंधित किताबों एवं पत्रिकाओं को उपलब्ध कराने में मदद की।

शोध-कार्य के दौरान कई उतार-चढ़ाव भरे पल आये। इस क्रम में परिवार के साथ ने मेरे आत्मबल को कमजोर नहीं पड़ने दिया। मैं माता श्रीमती शैल झा, पिता श्री निरंजन झा, बड़े भाई श्री कुमार शेखर, बड़ी बहन कुमारी भावना तथा भाँजी मिष्टी की आत्मीयता के प्रति आभारी हूँ।

इस शोध-कार्य के दौरान मिले मित्रों के साथ को भुलाया नहीं जा सकता। जब यह शोध-कार्य असम्भाव्यता की हद तक चुनौतीपूर्ण हो गया था, उस समय प्रियंका और मनोज के साथ ने आश्वस्ति का एहसास कराया। इन्होंने कठिन परिस्थितियों में जिस घनिष्ठ मैत्री-भाव का परिचय दिया उसके लिए इनका हृदय से आभारी हूँ। देवाशीष, सुजीत, पंकज और श्रितम ने पूरे शोध-कार्य के दौरान मेरा उत्साहवर्द्धन करने का कार्य किया, मैं इनका शुक्रगुज़ार हूँ। अंकिता और कार्तिक ने शोध-कार्य के क्रम में अपने भावनात्मक सहयोग से समय-समय पर तनाव को कम करने का काम किया है, हृदय के अंतःस्थल से उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। और अंत में उस 'नूर' का शुक्रिया जिसने एक अनजान शहर में कभी अज़नबी होने का एहसास नहीं होने दिया। मेरी परेशानियों और असमंजस को बिन कहे बूझ लेने के लिए ताउम्र इनका आभारी रहूँगा।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा प्रदान किये गये फ़ेलोशिप के लिए आयोग के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रस्तावना

कविता आज के समय और समाज की अनिवार्य ज़रूरत है। आज जब भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद की विसंगतियों ने मनुष्य के सांस्कृतिक-सामाजिक गतिविधियों को तहस-नहस करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है तब कविता की ज़रूरत और ज़िम्मेदारी और भी बढ़ गयी है। कविता को जीवित रखना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि यह मनुष्यता के आधारभूत मूल्यों को पोषित करती है। मनुष्यता के आधारभूत मूल्यों से तात्पर्य उन जीवन-मूल्यों से है, जो मानवीय चरित्र की बुनियाद हैं।कविता पद्यात्मक संयोजन मात्र न होकर एक ऐसी संस्कृति है जो मनुष्य को वस्तु की तरह देखने के उपक्रम का विरोध करती है। कविता जीवन के सुख-दुःख के अनुभव का बयान मात्र नहीं है बल्कि उसकी सफ़लता उससे आगे की यात्रा में है। काव्यात्मक चेष्टाएँ सिर्फ़ निजी अनुभव तक सीमित नहीं हुआ करती हैं, वह मनुष्य के अनुभवों को विस्तार देने का कार्य भी करती हैं। जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण और जिन जीवन-मूल्यों को कविता वहन कर रही होती है वह उसे ज़िन्दगी की अन्य चेष्टाओं से भिन्न और विशिष्ट बनाती है।

हम जिस समय में जी रहे हैं उसे कलात्मक चेष्टाओं की अभिव्यक्ति के लिए श्रेष्ठ समय नहीं कहा जा सकता। बाज़ार हमारे मूल्यों का निर्धारक बनता जा रहा है। यांत्रिकता की चपेट में आकर मनुष्य ने उस भावजगत को विस्मृत कर दिया है जो ज़िन्दगी को व्यावसायिकता तक सीमित न मानकर ज़्यादा बड़े परिप्रेक्ष्य में देखने का अवसर देती है। आज स्थिति यह है कि 'अंतरात्मा' शब्द के अस्तित्व को नकार दिया गया है। किसी को अपने अंतर्मन में झाँकने तक का अवकाश नहीं है। भौतिक यथार्थ को ही जीवन-यथार्थ मान लेने की जल्दबाज़ी ने जीवन के सामर्थ्य को संकुचित कर दिया है। मनुष्य की ऊर्जा के एक बड़े हिस्से का अपव्यय चीजों और भौतिक साधनों को जुटाने में हो रहा है। चीजों से दुनिया को इतना भर लिया गया है कि मनुष्य और वस्तु के बीच का अंतर मिटता जा रहा है। व्यावसायिकता की आँधी ने उन चेष्टाओं के लिए मुश्किल खड़ी कर दी है जो व्यवसाय नहीं हैं। बाज़ार और राजनीति के गठजोड़ ने इस आँधी को

और हवा दी है। ध्यातव्य है कि देश में राजनीतिक अवमूल्यन आज़ादी के बाद से ही प्रारंभ हो गया था। पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रीय शासन प्रणाली धीरे-धीरे एक अवधारणा बनकर रह गयी जिसे व्यावहारिक धरातल पर पूर्णतः कभी नहीं उतारा जा सका। स्वतंत्रता प्राप्ति के पचहत्तर वर्षों के बाद भी सांप्रदायिकता और जातिवाद का उन्मूलन नहीं हो सका है। आज की हकीक़त यह है कि राजनीति ने कलागत चेष्टाओं को भी अपनी गिरफ़्त में ले लिया है। पद के लालच में कई साहित्यकारों और कलाकारों ने भी सत्ता की मुख़ालिफ़त की तमीज़ को बिसरा दिया है। ऐसे माहौल में कविता की जवाबदेही और बढ़ जाती है।

कुँवर नारायण की कविताओं का पाठक उस आवाज़ की अनुगूँज को सुन सकता है जिसका ताल्लुक मनुष्य के शाश्वत जीवन-मूल्यों से है। ये कविताएँ मानव-जीवन की सार्थकता के लिए प्रतिबद्ध हैं। कुँवर जी की कविताएँ जीवन के गहरे अनुभव और विचारशीलता से अक्षुण्ण रूप में जुड़ी हुई हैं। ज़ाहिर है कि कवि की जीवन-दृष्टि ने कविता की अंतर्वस्तु के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। जिस भाषाई संस्कृति से ये कविताएँ हमारा परिचय कराती हैं उसका संबंध भाषा और जीवन दोनों के विस्तार से है। कुँवर नारायण के लिए जीवन से वाबस्तगी, किसी राजनीतिक दल या विचारधारा की प्रतिबद्धता से ज़्यादा मायने रखती है। कुँवर जी की बौद्धिक चेतना ने उन्हें किसी वाद या विचारधारा के कट्टर अनुयायी या विरोधी बनने से बचाये रखा। वे विचारधारा के प्रति संवादी रुख रखते हैं; इस संवाद में प्रशंसा और प्रशस्ति है तो आपत्तियों की गुंजाइश भी है। किसी विचारधारा के पीछे कवि के न भागने की एक महत्वपूर्ण वज़ह यह भी थी कि उन्हें साहित्य की स्वायत्ता में पूर्ण विश्वास है। उनकी कविताओं में मानव-जीवन के सामर्थ्य को उसकी पूरी संभावना के साथ विकसित होता हुआ देखा जा सकता है। भौतिक विकास की होड़ में मनुष्य अपने जीवन के सामर्थ्य को संकुचित न कर ले, यह कुँवर नारायण की कविताओं की केन्द्रीय चिंता रही है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में

आत्मिक विकास पर ख़ूब ज़ोर दिया गया है। श्रेष्ठ मानवीय-मूल्यों से संपन्न जीवन की चाह रखने वाले कुँवर जी की जीवन-दृष्टि निश्चय ही अपने युग का अतिक्रमण करने की शक्ति रखती है।

मानव-जीवन के बृहत्तर आशयों को तलाशती ये कविताएँ अपने पाठकों को बार-बार चिंतन-मनन की उस ऊँचाई पर ले जाती हैं जहाँ महत्वकांक्षाओं की अँधी दौड़बेमानी लगने लगती है और जीवन की सार्थकता के सवाल मन में उपजने लगते हैं। स्नातकोत्तर के दिनों से ही इन कविताओं में निहित 'जीवन-दृष्टि' एवं 'मूल्य-बोध' ने मुझे जीवन के विषय में फ़र्क़ तरह से सोचने के लिए प्रेरित किया है। आगे चलकर इस विषय में शोध की संभावनाओं ने विस्तार से अध्ययन के लिए प्रेरित किया, जिसका यह परिणाम है कि मैंने पीएच.डी. शोध-कार्य हेतु "कुँवर नारायण के काव्य में जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध" विषय का चयन किया।

शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय का संबंध कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से है। इस अध्याय के प्रथम उपअध्याय में कवि के प्रारंभिक जीवन, व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया और साहित्य के प्रति उनके झुकाव को समझने की कोशिश की गयी है।आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ. लोहिया जैसे विद्वानों के सान्निध्य ने इनके व्यक्तित्व निर्माण में क्या भूमिका निभायी, विभिन्न देशों एवं संस्कृतियों के संपर्क ने कवि की चेतना पर क्या असर डाला आदि प्रश्नों के भी उत्तर तलाशने की कोशिश इस उपअध्याय में की गयी है। इस अध्याय के दूसरे उपअध्याय का संबंध कवि की वैचारिकता से है। कुँवर नारायण बौद्धिक चेतना के कवि हैं। यह बौद्धिकता उन्होंने अर्जित की है। इस बौद्धिकता की निर्मिति में लखनऊ के साहित्यिक जीवन, पोलैंड, रूस और चीन की यात्राओं, नेरुदा, नाज़िम हिकमत और एंटन स्लोनिस्मकी से मुलाक़ात एवं आचार्य नरेन्द्र देव, आचार्य कृपलानी तथा डॉ. राममनोहर लोहिया जैसे विद्वानों के साहचर्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।'कुमारजीव' जैसे खंडकाव्य में बौद्ध धर्म के जिन उदात्त मूल्यों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हम देखते हैं उनके निर्माण के पीछे उत्तरदायी कारणों में नरेन्द्र देव का बौद्ध धर्म

संबंधी चिंतन भी रहा है। कुँवर जी की कविताओं में जीवन को बड़े आशयों से जोड़कर देखने की जो कोशिश है उसकी वजह कवि की वैचारिक चेतना है। तीसरा उपअध्याय 'कुँवर नारायण की कविताओं में चिंतन एवं अनुभूति' है। इस उपअध्याय के अंतर्गत कुँवर जी की सभी काव्यकृतियों में व्यक्त चिंतन एवं अनुभूति के विविध रूपों को प्रस्तुत किया गया है।

शोध-प्रबंध के द्वितीय अध्याय का शीर्षक है- 'कुँवर नारायण और उनका युग'। इस अध्याय को चार उपअध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उपअध्याय में कुँवर नारायण की कविताओं में दर्ज युगबोध को समझने की कोशिश की गयी है। कुँवर नारायण की कविताएँ समय और समाज से उनके गहरे सरोकारों को दिखाती हैं।समाज का उपेक्षित वर्ग भी उनकी कविता में स्थान पाता है। उनकी कविता इस अमानवीय समय में हममें मानवता के बीज बोने का और उसे सींचने का यत्न करती है। कुँवर जी की नज़रों में दुनिया की तमाम उपलब्धियों से बड़ी उपलब्धि मनुष्यता की पक्षधरता का साहस है। यह साहस उनकी कविता में आद्यान्त लक्षित किया जा सकता है। सामाजिक भेदभाव किसी भी समाज के उत्थान में बाधक बनता है। कुँवर नारायण किसी भी किस्म के भेद-भाव के खिलाफ़ थे। चाहे वह धर्म आधारित हो, पद या ओहदा पर आधारित हो, अर्थ पर आधारित हो या रंग-भेद पर आधारित। कुँवर जी की जनपक्षधरता उन्हें विश्व कवि के रूप में स्थापित करती है। दूसरे उपअध्याय में कुँवर नारायण की दृष्टि से उनके समकालीन रचनाकारों को समझने का यत्न है। तीसरे उपअध्याय में 'तीसरा सप्तक' से कुँवर नारायण के जुड़ाव एवं नयी कविता के रूप एवं कथ्य के विषय में कुँवर जी के विचारों को समझने का प्रयत्न है। इस अध्याय के चौथे उपअध्याय में युगीन विसंगतियों के बरअक्स कुँवर नारायण की कविताओं का मूल्यांकन किया गया है। ध्यातव्य है कि कुँवर नारायण की कविताओं में हमारे समय की विसंगतियों का प्रतिपक्ष रचने की शक्ति है।

शोध-प्रबंध का तीसरा अध्याय है-'एक अकुंठ कवि के काव्य में व्यंजित जीवन-दृष्टि'। इस अध्याय के अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त जीवन-दृष्टि को ढूँढने का प्रयत्न

किया गया है। इस अध्याय का प्रथम उपअध्याय 'मानव जीवन में आस्था' है। कुँवर नारायण की कविता सार्थक कविता है क्योंकि यहाँ एक विनम्र कोशिश है मानवीय जीवन को व्यापक फ़लक पर देखने की। तकनीक के महत्त्व से इंकार नहीं है, पर जीवन तकनीक तक ही सीमित नहीं हो सकती। भावजगत का एक विस्तृत क्षेत्र भी है उसके पास, जिसमें हमें नित्य विचरण करते रहना आवश्यक है ताकि हम अपने अस्तित्व को आकार दे सकें। मानव-जीवन की सबसे बड़ी ताक़त 'करुणा' का जन्म इसी भावजगत में होता है। कुँवर नारायण की कविता तकनीक की अँधी प्रतिस्पर्द्धा से इंकार करती है और मनुष्य को उसके सम्पूर्ण रूप में देखने का आग्रह करती है। मानवीय व्यक्तित्व को उसकी सम्पूर्णता में देखने का प्रयास करने वाली ये कविताएँ हमारे व्यापक जीवन–सन्दर्भों को उद्घाटित करती हैं। इसलिए इन कविताओं का पाठ करना जीवन का पाठ करना मालूम होता है। उनकी कविता में निज के विस्तार को देखा जा सकता है। इस आत्मालोचन से जो जीवन-दृष्टि विकसित होती है वह हर रोज़ पिछले कल से बेहतर, बृहत्तर, मनुष्यतर और कृतज्ञतर होती नज़र आती है। वे बार-बार जीवन के विविध प्रसंगों में लौटते हुए मानो उस उत्खनन की प्रक्रिया में संलग्न हों जिससे बेहतर मनुष्य को खोजकर निकाला जा सके। इस अध्याय का दूसरा उपअध्याय 'परंपरा और नवीनीकरण' है। इनकी ऐतिहासिक चरित्रों पर आधारित कविता हो या पौराणिक घटनाओं पर आधारित कविता, वह अतीत का वर्णन मात्र नहीं है। कुँवर जी अतीत को वर्तमान में फेंटकर जिस जीवन-अनुभव को निकालते हैं वह हमारे समय के लिए मूल्यवान है। इस अध्याय का तीसरा उपअध्याय 'मिथकों का समकालीन सन्दर्भों में प्रयोग' है। इस उपअध्याय में कवि की उन कविताओं को आधार बनाया गया है जो मिथक पर आधारित हैं। मिथक के प्रयोग द्वारा कुँवर जी ने हमारे समय से जुड़े सवालों को स्वर दिया है। इस अध्याय का चौथा उपअध्याय 'कुँवर नारायण की नज़रों में कविता' है। कवि की दृष्टि में कविता का क्या महत्त्व है एवं वह जीवन की अन्य चेष्टाओं से किस प्रकार भिन्न है, इसका विश्लेषण इस उपअध्याय के अंतर्गत किया गया है।

शोध-प्रबंध का चौथा अध्याय 'मूल्यों की कसौटी पर कुँवर नारायण की कविता' है। इस अध्याय का प्रथम उपअध्याय 'हिंदी कविता और मूल्य चेतना' है जिसके अंतर्गत मूल्यबोध की अवधारणा एवं स्वरूप तथा हिंदी कवियों की कविताओं में व्यंजित मूल्य को विश्लेषित किया गया है। इसका दूसरा उपअध्याय 'कुँवर नारायण की कविताओं में व्यक्त विविध मूल्य' है। कुँवर नारायण की कविताओं को पढ़ता हुआ पाठक स्वस्थ जीवन-मूल्यों से परिचित हो रहा होता है। कुँवर जी अपनी कविताओं में बार-बार उस द्वंद्व से गुजरते हैं जिसमें एक तरफ़ सुलभ जीवन का आसान तरीका है तो दूसरी तरफ़ कठिनाइयां हैं, परेशानियाँ हैं पर जीवन की सार्थकता को सिद्ध करने का उपक्रम भी है। कुँवर नारायण उन जीवन-मूल्यों पर विचार करते हैं जो किसी के व्यक्तित्व को अमरता प्रदान करते हैं। उपभोक्तावादी जीवन-शैली हमें लगातार उन जीवन-मूल्यों से दूर ले जा रही है इसलिए कवि की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। ऐसे दौर में कुँवर नारायण उन जीवन-पद्धतियों पर बार-बार विचार करते हैं जिन्हें अप्रासंगिक मान लिया गया है।इस अध्याय का तीसरा उपअध्याय 'नैतिकता' पर केंद्रितहै। ध्यातव्य है कि नैतिक साहस को कुँवर जी की कविताओं के केन्द्रीय कथ्य के रूप में बेहिचक स्वीकारा जा सकता है। कुँवर जी ज़िन्दगी को व्यावसायिकता और भौतिकता तक सीमित न मानकर ज़्यादा बड़े परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश को, कवि की नैतिक ज़िम्मेदारी मानते हैं। इस अध्याय का चौथा उपअध्याय 'प्रेम और जिजीविषा' है। कुँवर जी की कविताओं में एक तरफ़ प्रेम की उदात्त अभिव्यक्ति देखने को मिलती है तो दूसरी ओर युग की तमाम निराशाओं के बावजूद अपराजेय जीवन-शक्ति में कवि की दृढ़ आस्था है।

शोध-प्रबंध का पांचवां और अंतिम अध्याय है-'कुँवर नारायण की कविताओं का अभिव्यक्ति पक्ष'। इस अध्याय के प्रथम उपअध्याय का शीर्षक है- 'कुँवर नारायण के भाषा-संबंधी विचार'। कुँवर जी कविता के 'रूप' पक्ष को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। अपनी भेंट-वार्ताओं, आलेखों, टिप्पणियों में भी कवि ने भाषा के सामर्थ्य पर विस्तार से चर्चा की है। कविता

भाषा को जिस रूप में बरतती है वह मीडिया की भाषा या व्यावसायिकता की भाषा से भिन्न है। भाषा का यह बहुस्तरीय रूप उसकी शक्ति और सामर्थ्य को दिखलाता है। कवि ने शब्द को शक्ति और भावनाओं को आकार देने में भाषा की भूमिका पर विस्तार से चर्चा किया है। इस अध्याय का दूसरा उपअध्याय 'प्रतीकात्मकता एवं बिम्ब-विधान' है।'प्रतीक' एवं 'बिम्ब' को आधुनिक हिंदी कविता विशेषकर नयी कविता में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। कुँवर नारायण की कविताओं को उसमें प्रयुक्त 'प्रतीकों' एवं 'बिम्बों' ने नयी ऊँचाई दी है। अपनी कविताओं में जीवन की जटिलता एवं संश्लिष्टता को कवि ने प्रतीकों एवं बिम्बों के माध्यम से रूपायित किया है। इस अध्याय का अंतिम उपअध्याय 'काव्य-अभिव्यक्ति के अन्य पक्ष' है। इसके अंतर्गत कुँवर नारायण की कविताओं में प्रयुक्त अलंकार, संवाद-योजना, शब्द-भंडार, फैंटेसी तथा व्यंग्यात्मकता को ढूँढने और उसके प्रयोग की विवेचना का यत्न किया गया है।

इस शोध-प्रबंध के लेखन के दौरान मेरी यह कोशिश रही है कि मैं कुँवर नारायण की कविताओं को बिना किसी पूर्वाग्रह के विवेचित एवं विश्लेषित कर सकूँ। शोध के क्रम में अपने शोध-निर्देशक डॉ. अनुशब्द के साथ कुँवर जी की कविताओं के विविध पक्षों पर निरन्तर चर्चा होती रही। मैंने यह प्रयत्न किया कि इन कविताओं में निहित जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध को उद्घाटित कर सकूँ। जहाँ भी मैंने स्थापनाएँ दी हैं उसकी वजह को उल्लेखित किया है तथा महत्वपूर्ण उद्धरणों से अपनी बातों की प्रमाणिकता को बनाए रखने की कोशिश की है। अगर यह शोध-प्रबंध जीवन के उस उदात्त आशय को ढूँढ सका जो कुँवर नारायण की कविताओं के मूल में है तो मैं अपने इस परिश्रम को सार्थक समझूंगा।